

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 10, ज्ञानोदय

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो चर्च के इतिहास, सुधार से लेकर वर्तमान तक के अपने पाठ्यक्रम में हैं। यह सत्र 10 है, ज्ञानोदय।

हम उस जगह की यात्रा करने जा रहे हैं जहाँ हमें होना चाहिए। यह हॉल के बिल्कुल अंत में है, बिल्कुल अंत में, और यहाँ टेबल हैं, और हम टेबल के चारों ओर बैठेंगे। ठीक है, तो हम अपने व्याख्यान में जहाँ हमें होना चाहिए, वहाँ हैं, इसलिए हम इसका आनंद ले रहे हैं। व्याख्यान 5, ज्ञानोदय के युग का धर्मशास्त्र, बस एक अनुस्मारक है कि हमने पाठ्यक्रम की शुरुआत, निश्चित रूप से, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म और उसके बारे में क्या था, को देखते हुए की थी।

फिर, लूथर के माध्यम से सुधार, विशेष रूप से हमारे पाठ्यक्रम के लिए, कैल्विन के माध्यम से, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म की प्रतिक्रिया है, इसके लिए एक प्रारंभिक प्रतिक्रिया है। फिर, हमने सुधार प्रतिक्रिया, काउंटर-रिफॉर्मेशन और कैथोलिक रिफॉर्मेशन के लिए कैथोलिक प्रतिक्रिया को देखा। फिर, पिछले व्याख्यान में, हमने प्रोटेस्टेंटवाद को देखा, जो काफी एकीकृत आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था।

मेरा मतलब है, लूथर पहली पीढ़ी के थे, और कैल्विन दूसरी पीढ़ी के थे। प्रोटेस्टेंटवाद तब थोड़ा विभाजित होने लगता है और उन दो मुद्दों को याद करें जिनके कारण यह विभाजित हुआ था। यह चर्च की पूजा पद्धति और चर्च की राजनीति है।

तो, इंग्लैंड में सुधार ने एंग्लिकन चर्च का गठन किया, और एंग्लिकन चर्च से अंततः कांग्रेसलिज़्म आया, और बैपटिस्ट और कुछ बैपटिस्ट यूनिटेरियन बन गए। वास्तव में, कुछ कांग्रेसलिस्ट भी यूनिटेरियन बन गए। तो, आप यहाँ एक तरह की संप्रदायवाद की स्थापना शुरू कर रहे हैं।

हमने इस बात पर भी जोर देने की कोशिश की कि उस समय चर्च का अध्ययन केंद्रीय तर्क बन गया था। यदि औचित्य और आश्वासन सुधार के समय के केंद्रीय तर्क थे, तो जब आप सुधार के शुरू होने के बाद इस अवधि में आगे बढ़ते हैं, तो निश्चित रूप से चर्च का अध्ययन उस समय के लिए केंद्रीय हो जाता है। अब हम व्याख्यान 5, ज्ञानोदय के युग का धर्मशास्त्र शुरू कर रहे हैं, और अब हम केंद्रीय तर्क, एक अर्थ में, या इस समय की केंद्रीय कहानी को देखने जा रहे हैं, जो चर्च की आलोचना और ईसाई धर्म की आलोचना है।

तो, इस व्याख्यान में, मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि विभिन्न स्थानों पर किस तरह की आलोचना होती है, और विशेष रूप से, निश्चित रूप से, पश्चिमी यूरोप में, लेकिन यहाँ अमेरिका में भी। जो आलोचना होती है, जो ईसाई धर्म और चर्च को किनारे कर देती है, वह निश्चित रूप से ईसाई धर्म

और चर्च को किनारे कर देती है। फिर, अगला व्याख्यान इस बारे में है कि चर्च इस बारे में क्या करता है। खैर, अगला व्याख्यान चर्च में इंजील पुनरुत्थान के बारे में है।

तो, हम अपने समय के मामले में ठीक चल रहे हैं, और हम इस व्याख्यान को शुरू करेंगे, और फिर हमारे पास शुक्रवार है, फिर हमारे पास अगला सप्ताह है, और फिर उसके बाद का सप्ताह, हम पहले से ही मध्यावधि में हैं। तो, अगले सप्ताह के बाद, हम पाठ्यक्रम के आधे रास्ते पर हैं। तो हम यहाँ आगे बढ़ रहे हैं।

तो, ठीक है। परिचय के तौर पर, मैं यहाँ दो काम करने जा रहा हूँ। मैं कुछ शब्दों का परिचय देने जा रहा हूँ, और फिर मैं हमें आधुनिक दर्शन के उदय की याद दिलाना चाहता हूँ।

और याद रखें, पाठ्यक्रम में हम खुद से एक बात पूछना चाहते हैं कि धर्मशास्त्र और दर्शन के बीच क्या संबंध है। तो, बस कुछ शब्द। ठीक है, चलो बस खुद को याद दिलाते हैं, मैं तीन का उपयोग करने जा रहा हूँ। सुधार, पुनर्जागरण, ज्ञानोदय।

सुधार, शब्द सुधार। और याद रखें कि सुधार के बारे में एक बात यह थी कि इसने व्यक्तिगत विवेक को मुक्त कर दिया। और आप में से कुछ ने स्वयं की मुक्ति या विवेक की मुक्ति के बारे में सवाल का जवाब दिया।

आपने परीक्षा में उस प्रश्न का उत्तर दिया था। लेकिन निश्चित रूप से, सुधार मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन यह एक ऐसी प्रतिक्रिया थी जिसने मसीह के शरीर, चर्च को फिर से संगठित किया, और चर्च के बारे में फिर से समझा।

लेकिन उस चर्च के भीतर लोगों को विवेक की आज्ञादी थी। उन्हें अपने हिसाब से सोचने की आज्ञादी थी। पढ़े-लिखे लोग बेशक अपनी भाषा में शास्त्र पढ़ सकते थे।

वे अपनी भाषा में प्रचार सुन सकते थे। लेकिन यह सब चर्च के भीतर किया गया था। विवेक की सारी स्वतंत्रता चर्च के भीतर, मसीह के शरीर के भीतर की गई थी।

तो यह नंबर एक है, सुधार। ठीक है, अब सुधार के समानांतर, नंबर दो, दूसरी परिभाषा, निश्चित रूप से, पुनर्जागरण है। और पुनर्जागरण एक तरह से मूल स्रोतों, ग्रीक और हिब्रू स्रोतों, और इसी तरह के अन्य स्रोतों पर वापस जाना है।

जैसा कि एक व्यक्ति ने कहा, यह मानव जाति और मानवीय क्षमताओं की पुनर्प्राप्ति है। इसलिए, पुनर्जागरण सुधार के समानांतर चल रहा है। पुनर्जागरण ने लोगों को विवेक की एक तरह की स्वतंत्रता भी दी।

पुनर्जागरण ने उन्हें एक तरह से अपने लिए सोचने का विशेषाधिकार भी दिया, विवेक की यह स्वतंत्रता। अंतर यह है कि पुनर्जागरण के बहुत से विचारकों के साथ, सभी नहीं, लेकिन कुछ

पुनर्जागरण विचारकों के साथ, विवेक की स्वतंत्रता ने उन्हें चर्च से बाहर कर दिया। यह उन्हें मसीह के शरीर से बाहर ले गया।

इसलिए चर्च के भीतर किए गए सुधारवादी चिंतन के विपरीत, कभी-कभी पुनर्जागरण चिंतन चर्च से मुक्ति की तरह था और ऐसे शब्दों का निर्माण था जिनसे हम परिचित थे, जैसे धर्मनिरपेक्षता या मानवतावाद, इस तरह के शब्द। तो, इसने इस तरह का निर्माण किया। तो अब पुनर्जागरण में, स्वायत्तता की भावना है, और एक तरह की मानवीय स्वायत्तता की भावना है, लेकिन वह मानवीय स्वायत्तता मसीह के शरीर से अलग, चर्च से अलग की जाती है।

सभी पुनर्जागरण विचारकों के लिए नहीं, लेकिन कई लोगों के लिए। तो, चर्च के भीतर सुधार और पुनर्जागरण चर्च के बाहर बढ़ने लगा। ठीक है, और फिर नंबर तीन, बेशक, अब हम ज्ञानोदय पर आते हैं।

तो, ज्ञानोदय की एक परिभाषा। ज्ञानोदय 17वीं शताब्दी में शुरू होने वाला ज्ञानोदय का काल है, तर्क का काल, और तर्कसंगतता का काल। यह वास्तव में जीवन के हर पहलू पर तर्क लागू करने का एक सचेत प्रयास है।

तो मैं ज्ञानोदय को इस तरह परिभाषित करूँगा, वह काल जिसमें हम अब प्रवेश करने जा रहे हैं। जीवन के हर पहलू पर तर्क और तर्कसंगतता लागू करें। इसलिए, हम 17वीं सदी को तर्क का युग कहते हैं, लेकिन यहाँ एक तरह की सावधानी है।

भले ही हम इसे तर्क का युग कहते हैं, लेकिन एक छोटी सी चेतावनी है, और वह यह कि अगली सदी में, 18वीं सदी में, हर चीज़ के लिए तर्क की पर्याप्तता पर सवाल उठाया गया। उदाहरण के लिए, धार्मिक जीवन के लिए, आस्था के लिए तर्क की पर्याप्तता पर विशेष रूप से सवाल उठाया गया। इसलिए, तर्क, आप ज्ञानोदय के युग में हर चीज़ का न्याय तर्क से कर सकते हैं।

आप तर्क के नियम को हर चीज़ पर लागू कर सकते हैं। जीवन में एक तरह का पूर्व-स्थापित सामंजस्य है, लेकिन क्या उस तर्क की कोई सीमाएँ हैं? और कुछ लोगों ने कहा, हाँ, हमें यहाँ सावधान रहना होगा क्योंकि कभी-कभी जीवन के हर पहलू पर सिर्फ तर्क लागू करने से सीमाएँ हो सकती हैं, और धर्म के मामले में यह सबसे ज़्यादा देखने को मिलेगा। आप सिर्फ धर्म पर ही तर्क लागू नहीं कर सकते।

कुछ तो है। आस्था को यहाँ कहीं न कहीं आना ही चाहिए। तो यही वह दौर है जिसमें हम प्रवेश कर रहे हैं। तो, मैं यहाँ परिचय के तौर पर आपको दो दार्शनिकों की याद दिलाना चाहूँगा, ठीक है, मैं आपको तीन या चार दार्शनिकों की याद दिलाऊँगा, दो परिचय के लिए, और फिर हम कुछ अन्य दार्शनिकों के बारे में बात करेंगे क्योंकि हम अन्य चीज़ों को देखेंगे।

लेकिन हम आपको दर्शनशास्त्र के उन दिनों के दो दार्शनिकों की याद दिलाना चाहते हैं जब आपने अपने मुख्य पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र लिया था। तो, दो ऐसे दार्शनिक हैं जो आपके दिमाग में हमेशा बने रहेंगे और जिन्हें आप शायद कभी नहीं भूले होंगे, और आप अभी भी यहाँ पढ़ रहे होंगे। लेकिन उनमें से एक जॉन लॉक हैं, और यहाँ जॉन लॉक की तिथियाँ दी गई हैं।

ठीक है। तो, क्या आपको जॉन लॉक के बारे में कुछ याद है? जब आप जॉन लॉक के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में क्या आता है? जब आप जॉन लॉक के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में कुछ भी आता है, खासकर जब आप जॉन लॉक के बारे में उस तरह से सोचते हैं जिस तरह से हम चीज़ों को समझते हैं? ठीक है? यह सच है। यह सच है।

मैं नहीं था, और मैं यहाँ राजनीतिक सिद्धांत के बारे में इतना नहीं सोच रहा हूँ, ठीक है, यह एक ऐसी चीज़ है जो आपको याद है, और हम इसे तब भी देखेंगे जब आप रूसो जैसे लोगों के पास जाएँगे। जॉन लॉक के बारे में कुछ और? खैर, जॉन लॉक, जब आप चीज़ों के बारे में सोचने के तरीके की बात करते हैं, तो इस तरह के अनुभववाद, जॉन लॉक के लिए, दिमाग एक कोरे कागज़ की तरह है। मुझे नहीं पता कि आपको यह याद है या नहीं, लेकिन दिमाग एक कोरे कागज़ की तरह है, और आपके जीवन में संवेदनाएँ, आप जीवन में जो सीखते हैं, वह उस दिमाग पर डाला जाता है और आपके दिमाग पर छाप छोड़ता है, और इसी तरह।

हालाँकि, जहाँ तक जॉन लॉक का इस कोर्स का सवाल है, अनुभव ही वह जगह है जहाँ से ज्ञान शुरू होता है। अनुभव ज्ञान का सबसे अच्छा स्रोत है। जॉन लॉक के लिए, वह और अन्य लोग जिस चीज़ में रुचि रखते हैं, वह एक स्वाभाविक रहस्योद्घाटन होगा।

हम ईश्वर को कैसे समझते हैं? हम ईश्वर को प्राकृतिक धर्मशास्त्र के माध्यम से समझते हैं। हम ईश्वर को उसकी बनाई दुनिया को देखकर समझते हैं, और दुनिया को देखने का वह अनुभव ही वह छाप है जो हमारे दिमाग में बनती है, और हम उससे ईश्वर के बारे में कुछ जान सकते हैं। लेकिन जिस बात पर हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि शुरुआती बिंदु प्राकृतिक धर्मशास्त्र है।

आरंभिक बिंदु अनुभव है। आरंभिक बिंदु कोई प्रकट धर्मशास्त्र नहीं है। इसलिए आपकी चर्चा का आरंभिक बिंदु कोई प्रकट धर्मशास्त्र नहीं है, अर्थात् परमेश्वर का स्वयं को पवित्रशास्त्र के माध्यम से मसीह में प्रकट करना।

इसी तरह हम ईश्वर के बारे में जानते हैं, और हम इस दुनिया के बारे में कुछ हद तक जानते हैं। इसलिए यह एक अलग शुरुआत है। और अगर यह एक अलग शुरुआत है, तो यह एक अलग अंत बिंदु भी होगा, क्योंकि जहाँ तक उनका सवाल है, जहाँ तक लॉक का सवाल है, आप जो जानना चाहते हैं, उसका शुरुआती बिंदु वास्तव में हमारे अंदर है, न कि ईश्वर में या चर्च से आप ईश्वर के बारे में क्या सीख सकते हैं।

तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है, और यह एक ऐसा दर्शन है जो 17वीं शताब्दी, 18वीं शताब्दी में आने वाला है, और यह विकसित होने वाला है और महत्वपूर्ण होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, जॉन लॉक के लिए, यदि आप तर्कसंगतता या तर्कसंगतता जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं, तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। अब, दूसरा व्यक्ति इमैनुअल कांट है।

इमैनुअल कांट, ठीक है, कोई भी, आपको इमैनुअल कांट के बारे में क्या याद है? आपको इमैनुअल कांट के बारे में क्या याद है? कुछ भी? क्या इमैनुअल कांट के बारे में कुछ भी याद

आता है? कुछ खास? जॉन लॉक दाईं ओर वाला व्यक्ति है, और इमैनुअल कांट यहाँ बाईं ओर वाला व्यक्ति है। लेकिन इमैनुअल के बारे में कुछ भी याद आता है, रूथ? नैतिकता, है न? हम उस पर आएंगे। हाँ, यह महत्वपूर्ण हो जाता है, हाँ, नैतिकता।

इमैनुअल कांट के बारे में और कुछ? ठीक है, ठीक है, ठीक है, एक तरह से, इमैनुअल कांट ज्ञानोदय के युग में वयस्क होने वाले मनुष्यों का प्रतिनिधि है; वह इसका एक आदर्श प्रतिनिधि है। मानवता वयस्क हो गई है, मानवता एक तरह से परिपक्व हो गई है, और तर्क जीवन का आदर्श बन गया है। आप जीवन में चीजों का न्याय करने के लिए अपने तर्क का उपयोग करते हैं, और यह आपके ज्ञान का आदर्श बन जाता है।

आप तर्क के माध्यम से जानते हैं। अब, यह सब अच्छा है: तर्क, तर्कसंगतता, वयस्कता, और इस तरह की सभी चीजें अच्छी हैं, लेकिन इमैनुअल कांट ने पहचाना कि वह वह व्यक्ति है जो हमें यह पहचानने में मदद करता है कि तर्क की सीमाएँ हैं। और मुझे लगता है कि उनके लिए इसे इतना महत्वपूर्ण मानने का एक कारण यह था कि वे जर्मनी में पीटिज्म नामक एक आंदोलन में पले-बढ़े थे।

अब, पीटिज्म, हम अगले व्याख्यान में पीटिज्म के बारे में बात करने जा रहे हैं, इसलिए हमें अब पीटिज्म के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन पीटिज्म मूल रूप से एक बहुत अच्छा, अद्भुत आंदोलन था जो दिमाग और दिल को जोड़ता था। यह लूथरन विद्वत्तावाद के खिलाफ़ एक प्रतिक्रिया थी, जिसमें सिर्फ़ दिमाग था, दिल नहीं, सिर्फ़ दिमाग था, कोई भावना नहीं, लेकिन भगवान आपका भला करे, लेकिन पीटिज्म ने इन सबका मिश्रण कर दिया। और इसी तरह इमैनुअल कांट का पालन-पोषण पीटिज्म में हुआ।

तो निश्चित रूप से, फिर वह हमें याद दिलाता है कि तर्क की भी सीमाएँ होती हैं। इसलिए, जब बात आती है, उदाहरण के लिए, जब इमैनुअल कांट के लिए ईश्वर की बात आती है, तो आप ईश्वर को तर्कसंगतता से नहीं जानते। आप ईश्वर को नहीं जानते।

आपको ईश्वर के बारे में यह ज्ञान किसी कारण से नहीं मिलता। आप ईश्वर को केवल आस्था से ही जानते हैं। यह एक धार्मिक बात है जिसके द्वारा आप ईश्वर को जानते हैं।

और फिर आपने नैतिकता या नैतिकता वगैरह का ज़िक्र किया। तो, उनके पास एक नैतिक सिद्धांत था। तो, क्या आपको याद है, किसी को याद है कि वह नैतिक सिद्धांत क्या था? इसे स्पष्ट अनिवार्यता कहा जाता है।

क्या आपको वह याद है? स्पष्ट, भगवान आपका भला करे, स्पष्ट अनिवार्यता। इसलिए, मुझे स्पष्ट अनिवार्यता बहुत पसंद है। अपने कार्यों के परिणामों के बारे में सोचें यदि वे सार्वभौमिक थे।

भगवान आपका भला करे। यह स्पष्ट अनिवार्यता है। अपने कार्यों के परिणामों के बारे में सोचें।

अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों, अपने द्वारा किए जाने वाले नैतिक कार्यों, अपने द्वारा किए जाने वाले नैतिक कार्यों के बारे में सोचें। अपने कार्यों के परिणामों के बारे में सोचें यदि हर कोई ऐसा

करे। क्या वह एक अच्छी दुनिया होगी, या वह एक बुरी दुनिया होगी? क्या वह एक ऐसी दुनिया होगी जिसमें आप प्रसन्न होंगे, और भगवान प्रसन्न होंगे, या वह एक बुरी दुनिया होगी? इसलिए भगवान आपका भला करे।

तो, अब हम अपने कार्यों को सार्वभौमिक बना रहे हैं। तो, बस अपने कार्यों को सार्वभौमिक बनाइए और सोचिए कि क्या यह एक अच्छी या बुरी दुनिया होगी। तो, इमैनुअल कांट के लिए, यह स्पष्ट अनिवार्यता है।

यही नैतिक आदेश है। इसी तरह से आपको जीवन का मूल्यांकन करना चाहिए। मैंने बस एक मिनट में यह उदाहरण दे दिया है, लेकिन भगवान आपका भला करे।

भगवान आपका भला करे। यह फैल रहा है, है न? मुझे लगता है कि मैं थोड़ा पीछे जा रहा हूँ, लेकिन मैं इमैनुअल कांट में स्पष्ट अनिवार्यता और, जैसा कि आपने उल्लेख किया है, नैतिकता के बारे में सोचता हूँ। अब, आप जो कह सकते हैं, वह यह है कि इमैनुअल कांट ईश्वर में विश्वास करते थे, वे अमरता में विश्वास करते थे, वे परलोक में विश्वास करते थे, और इसी तरह, लेकिन वे पुण्य जीवन में भी विश्वास करते थे, बेशक, अपने कार्यों को सार्वभौमिक बनाना।

लेकिन आप यह कह सकते हैं कि हम धर्म को नैतिकता तक सीमित करना शुरू कर रहे हैं। हम धर्म को नैतिक जीवन, नैतिक जीवन, सदाचारी जीवन तक सीमित करना शुरू कर रहे हैं। और इसलिए धर्म शुरू हो रहा है। यहाँ एक न्यूनीकरणवाद चल रहा है।

और उस न्यूनीकरणवाद के साथ, क्या कांट का अनुसरण करने वाले कुछ लोगों के लिए ईश्वर और अवतार और पवित्र आत्मा और चर्च, मसीह के शरीर, इत्यादि जैसे अन्य सत्यों को भूलना संभव है? क्या उन अन्य चीजों को भूलना संभव है? इसका उत्तर हाँ है क्योंकि 18वीं शताब्दी में बहुत से लोग अन्य प्रकार की धार्मिक चीजों को भूल गए थे, और उन्होंने केवल सद्गुणी जीवन या अच्छे जीवन पर जोर दिया। कांट को पढ़ना वाकई मुश्किल है। मुझे लगता है कि आपने शायद अपने पाठ्यक्रम में यह जान लिया होगा, लेकिन जब मैं इमैनुअल कांट के बारे में सोचता हूँ, तो ऐसा तब होता है जब मैं सड़क पर गाड़ी चला रहा होता हूँ, और कोई मेरे सामने होता है, और वे अपनी कार की खिड़कियां नीचे कर रहे होते हैं, और वे अपनी बीयर की कैन और सिगरेट या अपने मैकडॉनल्ड्स के सामान को सड़क के किनारे फेंक रहे होते हैं।

और आप जानते हैं कि जब वे ऐसा कर रहे होते हैं तो मैं खुद से क्या सोचता हूँ? मुझे लगता है, आप जानते हैं, अगर इन लोगों ने इमैनुअल कांट को पढ़ा होता, तो वे ऐसा कभी नहीं करते। क्योंकि अगर वे सिर्फ अपने बारे में सोचते, तो क्या होता अगर हर कोई ऐसा करता? क्या होता अगर हर कोई सड़क पर गाड़ी चला रहा होता, अपनी खिड़की नीचे कर लेता, और सारा कचरा बाहर फेंक देता? यहाँ तक कि वे लोग भी उस दुनिया में नहीं रहना चाहेंगे। लेकिन शायद उन्होंने इमैनुअल कांट को नहीं पढ़ा है।

इसलिए, मेरा अनुमान है कि शायद उन्होंने इमैनुअल कांट को नहीं पढ़ा है। इसलिए, वे शायद इस बारे में नहीं सोच रहे हैं कि अगर मेरी कार्रवाई सार्वभौमिक हो जाए तो क्या होगा। इसके क्या

परिणाम होंगे? और यह कैसी दुनिया होगी? वे शायद इस तरह से नहीं सोच रहे हैं। लेकिन जब भी मैं ऐसा होते देखता हूँ, तो मैं हमेशा इमैनुअल कांट के बारे में सोचता हूँ और वह उनसे क्या कहेंगे।

लेकिन यह बात है। लेकिन क्या यह समस्या है, शायद, नैतिकता पर जोर देने, नैतिकता पर जोर देने, जीवन के गुणों पर जोर देने की? क्या कांट का अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा अन्य महान सत्यों या धार्मिक सत्यों को हाशिए पर रखने में कोई समस्या है? मुझे लगता है कि शायद यही समस्या थी। ठीक है, तो बस परिचय के तौर पर, यहाँ तीन शब्द हैं जिन्हें हम याद रखना चाहते हैं।

और फिर दो लोग जो हमें कहानी शुरू करने में मदद कर सकते हैं। यह आधुनिक दर्शन का जन्म है। आधुनिक दर्शन का प्रभाव न केवल इस सांस्कृतिक दुनिया और वैज्ञानिक दुनिया पर बल्कि धार्मिक दुनिया पर भी पड़ता है।

तो, दर्शन और धर्मशास्त्र के बीच क्या संबंध है? लॉक और कांट हमें उस संबंध को थोड़ा समझने में मदद करते हैं। यहाँ कुछ भी है? क्या हम ठीक हैं? अब, यदि आप पृष्ठ 13 पर अपने नोट्स देख रहे हैं, तो मैं अब यह देखना चाहता हूँ कि ज्ञानोदय का यह युग किस तरह से चार स्थानों पर काम करता है। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका।

तो, इन चार जगहों का संक्षिप्त विवरण देने के लिए, मैं देखना चाहता हूँ कि यहाँ क्या हुआ। तो, हम इंग्लैंड से शुरू करेंगे। इंग्लैंड में ज्ञानोदय की इस तरह की समझ कैसे विकसित हुई? ठीक है।

ओह, माफ़ करें। मुझे यहाँ कुछ शब्दों के बारे में सोचना है। इंग्लैंड में जिस तरह से यह काम किया गया वह एक आंदोलन था जिसे देववाद कहा जाता है।

ठीक है, अब, देववाद एक संप्रदाय नहीं है। इसलिए, हमें इसे एक संप्रदाय के रूप में नहीं सोचना चाहिए। यह एक प्रोटेस्टेंट संप्रदाय नहीं है।

देववाद की सोच अंततः प्रोटेस्टेंट संप्रदायों में काम करेगी। हालाँकि, देववाद अपने आप में एक दार्शनिक, धार्मिक दृष्टिकोण से अधिक है। इसलिए, देववाद वास्तव में 17वीं शताब्दी में इंग्लैंड में शुरू हुआ और वास्तव में ज्ञानोदय के दौरान इंग्लैंड में फला-फूला।

और फिर यह अमेरिका में आया। लेकिन जब आप ईश्वरवाद के बारे में उनके दृष्टिकोण के संदर्भ में सोचते हैं, तो ईश्वर के बारे में देववादियों का मानक दृष्टिकोण क्या है? क्या ईश्वर ऊपर है? उसने दुनिया बनाई, उसने इसे चलाया, और फिर वह पीछे खड़ा हो गया, और वह इस सृष्टि का पर्यवेक्षक है जिसे उसने बनाया है। अक्सर, यह घड़ीसाज़ ईश्वर है जिसे उसने बनाया, घड़ीसाज़ ईश्वर।

उन्होंने घड़ी बनाई, उसे सेट किया, उसे टिक-टिक किया और फिर वापस खड़े हो गए। तो, और देववाद ऐसा ही था, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसकी शुरुआत इंग्लैंड में हुई और यहाँ अमेरिका में आई।

तो, बस इतना ही कि हम स्पष्ट हो जाएं, मैं देववाद के छह पहलुओं का उल्लेख करना चाहूंगा। इसलिए जैसे-जैसे देववाद इंग्लैंड में ज्ञानोदय के युग में आकार लेता है, देववाद के बहुत सारे पहलू हैं, लेकिन मैं केवल छह का उल्लेख करना चाहता हूँ ताकि हम उनके बारे में स्पष्ट हो सकें। ठीक है, नंबर एक, देववादी एक निर्माता ईश्वर में विश्वास करते थे।

तो, जैसा कि मैंने कहा, वे एकेश्वरवादी थे और वे एक ईश्वर में विश्वास करते थे। वे, आप जानते हैं, अज्ञेयवादी या नास्तिक नहीं थे या वे बहुदेववादी नहीं थे। वे सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास करते थे।

वे एक ईश्वर में विश्वास करते थे। ठीक है, दूसरी बात, देववादियों की मानवीय स्वतंत्र इच्छा के बारे में बहुत उच्च राय थी। इंग्लैंड में देववादी इंग्लैंड में कैल्विनवादियों और पूर्वनियति के सिद्धांत के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे थे।

तो ये लोग इच्छा की स्वतंत्रता में विश्वास करते थे, और यह ब्रिटिश धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण होने जा रहा है, लेकिन यह भी महत्वपूर्ण होने जा रहा है, मुझे कहना चाहिए, यह ब्रिटिश और अमेरिकी धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण होने जा रहा है, लेकिन यह ब्रिटिश और अमेरिकी राजनीतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण होने जा रहा है। तो, इच्छा की स्वतंत्रता के साथ, मनुष्य चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं, नंबर दो। ठीक है, नंबर तीन, देववादियों ने इमैनुअल कांट की तरह एक सदाचारी जीवन में विश्वास किया।

वे नैतिक जीवन और नैतिक जीवन में विश्वास करते थे। उनका मानना है कि यह जीवन जीने का एक अच्छा तरीका है। आपको यह बताने के लिए बाइबल की ज़रूरत नहीं है।

आपकी अपनी तरह की तर्कसंगत सोच आपको यह बता सकती है। तो यह नंबर तीन है। नंबर चार, देववादी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।

उनका मानना था कि इस जीवन में सब कुछ तय नहीं होने वाला है। इसलिए, देववादियों ने परलोक में विश्वास किया, हालांकि यह काफी अस्पष्ट था, और वे पुरस्कार और दंड में विश्वास करते थे। इसलिए वे स्वर्ग और नर्क में एक अर्थ में विश्वास करते थे, लेकिन यह काफी अस्पष्ट है, लेकिन एक परलोक है, और पुण्यवान लोगों के लिए पुरस्कार हैं, और अनैतिक लोगों के लिए दंड हैं।

तो, वे इस पर विश्वास करते थे। तो, पाँचवाँ, वे तर्क के महत्व पर विश्वास करते थे। वास्तव में, उन्होंने धार्मिक और निश्चित रूप से सांस्कृतिक रूप से तर्क के महत्व को रेखांकित किया।

और खास तौर पर सांस्कृतिक रूप से, खासकर जब राजनीतिक जीवन की बात आती है। तो, ठीक है। नंबर छह, वे प्राकृतिक धर्मशास्त्र के महत्व में विश्वास करते थे।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राकृतिक धर्मशास्त्र कितना महत्वपूर्ण है। और प्राकृतिक धर्मशास्त्र क्या है? प्राकृतिक धर्मशास्त्र ईश्वर द्वारा निर्मित व्यवस्था को देखता है और उस निर्मित व्यवस्था से कुछ निष्कर्ष निकालता है। इसलिए आप ईश्वरवादियों के लिए ईश्वर की रचना को देखते हैं, और ईश्वर व्यवस्था का ईश्वर है, सुंदरता का ईश्वर है, डिजाइन का ईश्वर है, इत्यादि।

अब, दुर्भाग्य से, देववादियों ने प्राकृतिक धर्मशास्त्र की समस्याओं से पर्याप्त रूप से नहीं जूझा। इसलिए, प्राकृतिक धर्मशास्त्र एक चीज है। जब आप आज जैसे दिन पर होते हैं और हमारे परिसर में ब्रह्मांड की सुंदरता, व्यवस्था और डिजाइन को देखते हैं, तो आप जानते हैं, यह ठीक है। और प्राकृतिक धर्मशास्त्र आपको थोड़ा सा रास्ता दिखा सकता है, जैसा कि देववादियों का मानना था।

वे इस पर काफी निर्भर थे। जिस बात पर वे पर्याप्त रूप से विचार नहीं करते थे, वह यह है कि आप सुनामी, भूकंप, बाढ़ और काली मौत के साथ क्या करते हैं? जब प्राकृतिक दुनिया व्यवस्था, सुंदरता और डिजाइन के ईश्वर को प्रदर्शित नहीं करती है तो आप क्या करते हैं? तब आप क्या करते हैं? फिर आपका प्राकृतिक धर्मशास्त्र कहाँ है, आप जानते हैं? इसलिए दुर्भाग्य से, जबकि वे प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर बहुत अधिक निर्भर थे, मुझे नहीं लगता कि उन्होंने प्राकृतिक धर्मशास्त्र की सीमाओं के साथ पर्याप्त रूप से व्यवहार किया। प्राकृतिक धर्मशास्त्र हमें केवल इतनी दूर तक ले जा सकता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्होंने इसके साथ पर्याप्त व्यवहार किया।

लेकिन वैसे भी, वे उस पर निर्भर थे। इसलिए जब मैं इंग्लैंड में देववाद के बारे में सोचता हूँ, और जो अंततः यूनिटेरियनवाद नामक एक संप्रदाय में विकसित होने जा रहा है, जब मैं इंग्लैंड में देववाद के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे देवादियों की उन छह विशेषताओं के बारे में सोचना पड़ता है। अब इस देववाद को रेखांकित करने के लिए, मैं दो देववादी लेखकों की ओर इशारा करना चाहता हूँ, मुझे खेद है, दो देववादी लेखक जो महत्वपूर्ण थे।

एक लेखक जॉन टॉलैंड नाम का एक आदमी था, और ये उसकी तारीखें हैं, और उसने एक किताब लिखी जिसका नाम था क्रिश्चियनिटी नॉट मिस्टीरियस। क्रिश्चियनिटी नॉट मिस्टीरियस। ठीक है।

ओह, वह यहाँ तीसरे नंबर पर है। ईसाई धर्म रहस्यमय नहीं है, जॉन टॉलैंड। वह एक अंग्रेज़ आस्तिक था, और उसकी किताब आस्तिकता का एक घोषणापत्र थी।

उनकी किताब देववाद की बाइबिल की तरह थी और इंग्लैंड में देववाद की सबसे ज़्यादा बिकने वाली किताब थी। और उन्होंने जो कोशिश की, मेरा मतलब है, शीर्षक, मुझे लगता है, बहुत स्पष्ट है। उनका मूल सिद्धांत यह है कि ईसाई धर्म में कुछ भी रहस्यमय नहीं है।

ईश्वर, ईसाई धर्म और चर्च के बारे में हमें जो कुछ भी जानना है, वह सब तर्क से जाना जा सकता है। इसलिए, यहाँ कुछ भी रहस्यमय नहीं है। यहाँ कोई रहस्य नहीं है।

तो यही उनकी थीसिस है। यही वह दावा है जो उन्होंने अपनी किताब में किया है, जो एक अच्छा देववादी दावा है। तो, वह ज्ञानोदय युग की सभी शिक्षाओं को ले रहे हैं, उन्हें ईसाई धर्म पर लागू कर रहे हैं, अपनी किताब लिख रहे हैं, और समझा रहे हैं कि देववाद क्या है।

इसलिए, मुझे लगता है कि हमें उन पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उनका और उनकी किताब का हम पर बहुत गहरा प्रभाव था। दूसरी किताब है मैथ्यू टिंडल की किताब, क्रिश्चियनिटी एज़ ओल्ड ऐज़ क्रिएशन। क्रिश्चियनिटी एज़ ओल्ड ऐज़ क्रिएशन।

ठीक है? तो, ईसाई धर्म में भी यही बात है। जहाँ तक उनका सवाल है, सृष्टि जितनी पुरानी है, तर्क ही धर्म की कसौटी है। धार्मिक जीवन में, ईसाई जीवन में, चर्च में, ईश्वर के बारे में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे आप तर्क से नहीं जान सकते। बस तर्क लागू करें, तर्कसंगतता लागू करें, और आप पाएंगे कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे आप नहीं जान सकते। आप समझ जाएँगे कि धर्म क्या है।

ठीक है। अब, जब ऐसा उनकी किताब में होता है, तो वे दो बातों पर सवाल उठाते हैं, एक तरह से, किताब में, जाहिर है। नंबर एक, वे बाइबल में चमत्कारों पर सवाल उठाते हैं, क्योंकि चमत्कार तर्कसंगत नहीं हैं।

वे तर्कसंगत नहीं हैं। उनका तर्क नहीं दिया जा सकता। इसलिए, उन्हें हटा दिया जाना चाहिए क्योंकि वे सख्त प्राकृतिक धर्मशास्त्र के अनुरूप नहीं हैं।

तो, सबसे पहले बाइबल में चमत्कारों को खत्म कर देना चाहिए। ठीक है? और दूसरी चीज़ जो खत्म हो जानी चाहिए वह है ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की कोई भी भावना, ईश्वर द्वारा प्राकृतिक दुनिया के अलावा खुद को प्रकट करने की कोई भी भावना। तो, किसी किताब में खुद को प्रकट करना या किसी व्यक्ति में, मसीह में खुद को प्रकट करना, यह सब खत्म हो जाता है।

आप ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए, वह जो करना चाहता है वह यह है कि ईसाई धर्म को सृष्टि जितनी पुरानी माना जाए। पुस्तक का शीर्षक सृष्टि जितनी पुरानी है, और सृष्टि का विवरण यहाँ है।

और वह ऐसी हर चीज़ को छोड़ना चाहता है जो प्राकृतिक धर्मशास्त्र के खिलाफ़ बोलती हो। देववादी शास्त्रों से चुनने और चुनने में बहुत अच्छे थे। इसलिए अगर सृष्टि का वर्णन एक अच्छा उदाहरण है, सृष्टि का वर्णन, एक ईश्वर ने व्यवस्थित तरीके से सृष्टि की।

लेकिन अवतार, ईश्वर का देह में आना, या चमत्कार करने वाला यीशु, या मृतकों में से जी उठने वाला यीशु, इस तरह की चीज़ें बाहर हैं। इसलिए, उसे चुनना होगा और चुनना होगा। ठीक है।

उनका मानना है कि सृष्टि का विवरण एक अच्छा उदाहरण है; उनका मानना है कि वे, मेरा मतलब है, टिंडर एकेश्वरवादी था। इसलिए, वह मानता था कि एक ईश्वर की रचना की गई थी। वह सृष्टि के विवरण पर विश्वास नहीं करता जैसा कि आप बाइबल में पढ़ते हैं।

उनका मानना है कि यह ईश्वर की सृष्टि का उदाहरण है, लेकिन यह वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं है। वह यही कहेंगे। लेकिन उन्हें इसकी चिंता नहीं है।

एक ईश्वर ने बनाया। जहाँ तक उसका सवाल है, यह बाइबिल की कहानी है। लेकिन आप तर्क या तर्कसंगतता से इसकी पुष्टि नहीं कर पाएँगे। इसलिए, हमने ऊपर जिन चीज़ों का जिक्र किया है, टिंडर उन्हीं पर विश्वास करेगा।

लेकिन हाँ, इन लोगों को बाइबिल से बहुत कुछ चुनना और चुनना होगा। उन्होंने पूरी बाइबिल को इसलिए नहीं फेंका क्योंकि वे एकेश्वरवादी थे, लेकिन उन्हें चुनना और चुनना था। ठीक है, तो देववाद।

तो, इंग्लैंड में ज्ञानोदय की अभिव्यक्ति देववाद थी। यह एकेश्वरवाद में विकसित हुआ, और देववादियों का मानना यही था। और अगर आपके पास लिखने, उपदेश देने, पढ़ाने जैसे लोग हैं, और उनके लेखन हमारे बेस्टसेलर बन रहे हैं, जिसे हम आज बेस्टसेलर कहेंगे, तो आपको इंग्लैंड में ज्ञानोदय का बहुत अच्छा विकास देखने को मिलेगा।

क्या यह समझ में आता है? क्या किसी के पास इस बारे में कोई सवाल है? मैं आपसे ईश्वरवादियों पर विश्वास करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं आपसे सिर्फ ईश्वरवादियों को समझने के लिए कह रहा हूँ। क्या हम उनके साथ ठीक हैं? वे इस पर विश्वास नहीं करते।

वे यह नहीं मानते कि यीशु ईश्वर थे। वे मानते हैं, और हम फ्रांस और जर्मनी में जाकर शायद इस बात को और भी विस्तार से देखेंगे, लेकिन वे मानते हैं कि वे एक अच्छे नैतिक व्यक्ति थे। वे मानते हैं कि वे एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

हालाँकि, ऐसे लोग भी थे जो आए, खास तौर पर जर्मनी में, जिन्होंने यीशु की ऐतिहासिकता को नकार दिया। लेकिन ये देववादी मानते हैं कि वह एक अच्छे नैतिक और नैतिक व्यक्ति थे। दरअसल, उनका मानना था कि आपको यीशु का अनुसरण करना चाहिए और यीशु जैसा बनना चाहिए।

वह एक अच्छे नैतिक व्यक्ति थे। आपको भी एक अच्छे नैतिक व्यक्ति होना चाहिए। क्या आपको सी.एस. लुईस की बात याद है, क्या आपको ईसाई धर्म में सी.एस. लुईस का खंडन याद है? यीशु एक अच्छे व्यक्ति हैं।

तुम्हें यीशु जैसा बनना चाहिए। बस यीशु का अनुसरण करो। तुम एक अच्छे इंसान बनोगे।

क्या आपको सीएस लुईस याद है? उन्होंने क्या कहा था? वह झूठा, पागल, झूठा है। आप ऐसा नहीं कर सकते। आप यीशु को एक अच्छे इंसान के रूप में नहीं अपना सकते जिसका आप अनुसरण करने जा रहे हैं।

यीशु के साथ केवल दो विकल्प हैं। वह या तो झूठा और पागल है क्योंकि वह खुद को भगवान कहता है, जो वास्तव में यहाँ समस्याग्रस्त है, या, और सुसमाचार लेखक कहते हैं कि भगवान

देहधारी हो गए, या वह या तो झूठा और पागल है या वह भगवान है। लेकिन आप यह बीच का रास्ता नहीं अपना सकते जो ये देववादी यीशु के साथ अपनाने की कोशिश कर रहे हैं।

एक अच्छे इंसान, एक नैतिक इंसान के तौर पर आपको यीशु जैसा होना चाहिए। मैं ऐसा नहीं कर सकता। इसलिए सीएस लुईस ने एक तरह से ईसाई धर्म में ही इस पर विराम लगा दिया।

मेरा मतलब है, लोगों ने इसे सीएस लुईस से पहले भी किया था, लेकिन शायद हमारे पढ़ने के संदर्भ में। क्या आप सभी ने मेरे ईसाई धर्म को पढ़ा है? ठीक है। ठीक है।

अगर आपने इसे नहीं पढ़ा है, तो आप इसे अपनी गर्मियों की पढ़ने की सूची में शामिल करना चाहेंगे। ठीक है। तो, देववादी, वे वहाँ हैं।

देववादियों के बारे में कोई सवाल? क्या आप उनके साथ पूरी तरह से सहमत हैं? ठीक है। वे एक बहुत ही महत्वपूर्ण समूह थे क्योंकि वे ज्ञान लेकर आए और इसे धर्म पर लागू किया। तो, ठीक है।

नंबर सी फ्रांस है। अब, मैं फ्रांस के लिए जो शब्द इस्तेमाल करता हूँ, क्या मैंने? मैंने इसे चीज़ में नहीं डाला। ठीक है।

ओह, यहाँ, मुझे कुछ शब्द मिल गए हैं। है न? हाँ, मुझे मिल गए हैं। स्कोलास्टिसिज़्म, खैर, हम जानते हैं कि यह क्या है।

देववाद एकेश्वरवाद में विकसित हुआ। हमें अभी तक सर्वेश्वरवाद नहीं मिला है। जब हम कांट के बारे में बात कर रहे थे, तो मुझे स्पष्ट अनिवार्यता शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए था।

तो, नैतिक अनिवार्यता, स्पष्ट अनिवार्यता। तो वैसे भी, मैंने सोचा, मैं इस 18वीं, 17वीं सदी, 18वीं सदी में जो कुछ चल रहा है, उससे कैसे निपट सकता हूँ? इसलिए मैंने वहाँ एक स्टॉप साइन लगा दिया। यह ऐसा है, जैसे कि मैं चाहता हूँ कि जब मैं इनमें से कुछ लोगों को पढ़ूँ, खासकर उन दो लोगों को जिनका हम अभी उल्लेख करने जा रहे हैं, तो मैं बस चिल्लाकर कहना चाहता हूँ कि रुको।

आइए इस पर फिर से विचार करें। आइए इस पर फिर से चर्चा करें क्योंकि ये लोग हमें ऐतिहासिक ईसाई धर्म, रूढ़िवादिता और धर्मशास्त्र से बहुत दूर ले जा रहे थे। तो, ठीक है।

तो खैर, वे वहाँ हैं। ठीक है। ठीक है।

चलो फ्रांस चलते हैं और देखते हैं कि फ्रांस में क्या हुआ। फ्रांस में मैं जिस शब्द का इस्तेमाल करता हूँ वह है प्रकृतिवाद। तो, इंग्लैंड में मैं जिस शब्द का इस्तेमाल करता हूँ वह है देववाद।

फ्रांस में, मैं जिस शब्द का इस्तेमाल करता हूँ वह है प्रकृतिवाद। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि 18वीं सदी में फ्रांस में जो कुछ हुआ वह इंग्लैंड में जो हुआ उससे कहीं ज़्यादा क्रांतिकारी था। बहुत कम संयमित।

देववादी बहुत संयमित, तर्कसंगत, प्रबुद्ध लोग थे। फ्रांस में जो कुछ हुआ वह इंग्लैंड में जो हो रहा था उससे कहीं कम संयमित था। और फ्रांस में संस्थागत चर्च के खिलाफ एक तरह का युद्ध चल रहा था।

और इस तरह फ्रांसीसी क्रांति आई। मैंने जो एक आँकड़ा पढ़ा था, वह यह था कि फ्रांसीसी क्रांति के समय, 1789 तक, फ्रांस की एक चौथाई ज़मीन चर्च के स्वामित्व में थी। फ्रांसीसी क्रांति के समय तक एक चौथाई ज़मीन चर्च के स्वामित्व में थी।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोग संस्थागत चर्च से इतने परेशान थे क्योंकि, जहाँ तक उनका सवाल था, संस्थागत चर्च सिर्फ़ फ्रांस के राजघरानों को बपतिस्मा दे रहा था। और इस तरह, फ्रांसीसी क्रांति आई, और बेशक, यह एक भयानक, भयानक, भयानक क्रांति थी। और एक बहुत ही खूनी क्रांति।

भयानक क्रांति। तो, फ्रांस में जो हुआ वह धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही दृष्टि से अन्य स्थानों की तुलना में कहीं अधिक क्रांतिकारी था। इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो इस बात को रेखांकित करने के लिए, हम बस कुछ लोगों पर नज़र डालने जा रहे हैं। सबसे पहले, हम स्पिनोज़ा का ज़िक्र करने जा रहे हैं। ठीक है, और आपके पास स्पिनोज़ा, बेनेडिक्ट स्पिनोज़ा, एक फ्रांसीसी विचारक, एक फ्रांसीसी लेखक की तारीखें हैं।

तो, स्पिनोज़ा के बारे में जो बुनियादी बात आप जानना चाहते हैं, वह यह है कि स्पिनोज़ा का धर्म और बाइबल के प्रति बहुत ही, बहुत ही चरम, अगर आप स्पिनोज़ा की कोई भी रचना पढ़ें, तो बहुत ही अत्यधिक आलोचनात्मक रवैया था। उदाहरण के लिए, बाइबिल के प्रति उनका रवैया देववादियों की तुलना में कहीं अधिक कट्टरपंथी आलोचनात्मक था। और यह इस तथ्य के बावजूद था कि उनकी पृष्ठभूमि यहूदी थी।

स्पिनोज़ा ने वास्तव में जो विकसित किया वह एक प्रकार का धार्मिक सर्वेश्वरवाद था। यहाँ यह है, चौथी बुलेट नीचे। स्पिनोज़ा ने वास्तव में जो विकसित किया वह एक प्रकार का धार्मिक सर्वेश्वरवाद था।

वह बाइबल के ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। वह चर्च के ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। लेकिन शायद इस दुनिया में कुछ पवित्र है जिसमें हम रहते हैं।

शायद कुछ है, शायद जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें पवित्रता है। और इसलिए पैन्थिज्म उस तक पहुँचता है। इसलिए, स्पिनोज़ा वास्तव में देववादियों की तुलना में बहुत अधिक कट्टरपंथी है, और वह इस अवधि के दौरान फ्रांस में दार्शनिक रूप से क्या होने जा रहा है, इसका उदाहरण देता है जिसे हम प्रकृतिवाद कहते हैं।

यह सब मेरे लिए दिलचस्प है क्योंकि स्पिनोज़ा की पृष्ठभूमि यहूदी थी। उनका जन्म एक यहूदी परिवार में हुआ था, और इसलिए आपने सोचा होगा कि वह उतने कट्टरपंथी नहीं होंगे, लेकिन फिर भी उन्होंने ऐसा किया। तो वह एक व्यक्ति है जिसका हम अभी उल्लेख करने जा रहे हैं।

दूसरा व्यक्ति जिसका हम उल्लेख करने जा रहे हैं, वह है वोल्टेयर। वोल्टेयर इस तर्क को थोड़ा और आगे ले जाता है, वह स्पष्ट रूप से स्पिनोज़ा से बाद में पैदा हुआ था, और फिर तर्क को सीधे 18वीं शताब्दी में ले जाता है। ठीक है, तो वोल्टेयर के लिए।

सर्वेश्वरवाद। सर्वेश्वरवाद एक प्रकार से एकेश्वरवाद का खंडन है। यह एक ईश्वर और दुनिया में एक ईश्वर की रचना का खंडन है।

यह विश्वास है कि पवित्रता जरूरी नहीं कि ईश्वर ही हो, बल्कि पवित्रता इस दुनिया में है। इसलिए, आप पेड़ों और नालों को देखकर दुनिया में पवित्रता पा सकते हैं। तो ईश्वर एक तरह से नालों में है।

वह पेड़ों में है। वह पहाड़ों में है और इसी तरह। लेकिन यह बिलकुल भी, यह बाइबल का परमेश्वर नहीं है।

यह वह ईश्वर नहीं है जिसने सृष्टि की और जिसके पास अपनी सृष्टि पर शक्ति और अधिकार है, इत्यादि। यह एक तरह का धार्मिक है; यह एक धार्मिक सर्वेश्वरवाद है, एक तरह का विश्वास है कि ईश्वर, जो कुछ भी है, वह बाइबल का ईश्वर है। नहीं। क्या यह मसीह है? नहीं।

क्या यह पवित्र आत्मा है? नहीं। लेकिन यह कि ईश्वर किसी तरह ब्रह्मांड में मौजूद है। क्या यह समझ में आता है? मुझे नहीं लगता कि यह ज़्यादा समझ में आता है, लेकिन इसे हम एक तरह का धार्मिक सर्वेश्वरवाद कहते हैं।

यहीं पर वह समाप्त होता है। तो, वहाँ भी बहुत कुछ नहीं है, वहाँ भी बहुत कुछ नहीं है। अगर आप, मुझे लगता है, मुझे लगता है कि अगर आप एक चरम सर्वेश्वरवादी हैं, तो मुझे लगता है कि आपको उस प्राकृतिक दुनिया की पूजा करनी होगी।

मुझे लगता है कि अगर आप सर्वेश्वरवाद को चरम सीमा तक ले जाते हैं, अगर पवित्रता उन पेड़ों में है, तो आप उन पेड़ों की पूजा करना शुरू कर देते हैं क्योंकि पवित्रता वहाँ है, देवता वहाँ हैं। या अगर पवित्रता उस नाले में है, तो आप उस नाले की पूजा करना शुरू कर देते हैं क्योंकि पवित्रता वहाँ है, है न। क्या यह समझ में आता है, जैसी? तो वह निश्चित रूप से, निश्चित रूप से सर्वेश्वरवाद में चला गया और निश्चित रूप से चर्च द्वारा सिखाई गई किसी भी चीज़ से दूर चला गया या बाइबिल ने भगवान और अवतार और इस तरह की चीज़ों के बारे में सिखाया।

कुछ और। मुझे लगता है कि वो वॉल्टेयर की तुलना में सौम्य थे। मुझे लगता है कि वॉल्टेयर की तुलना में हर कोई सौम्य था क्योंकि वॉल्टेयर के लिए धर्म सिर्फ़ और सिर्फ़ नैतिकता और आचार-विचार में ही है।

उनका धार्मिक दृष्टिकोण नैतिकता और नैतिक जीवन जीने के बारे में था। और वह वास्तव में घृणा करते थे, मुझे नहीं लगता कि यह बहुत कठोर शब्द है, वह ईसाई धर्म या चर्च से निकलने वाली किसी भी चीज़ से घृणा करते थे। वह चर्च की शिक्षाओं से घृणा करते थे।

वास्तव में, उनके एक लेख में लिखी गई प्रसिद्ध पंक्तियों में से एक है, बदनामी को कुचल दो। खैर, इससे उनका मतलब चर्च को कुचलना था और चर्च द्वारा विश्वास और सिखाई जाने वाली हर चीज़ को कुचल देना था। इसे कुचल दो, भगवान और अवतार और यीशु और स्थानीय चर्च और इसी तरह के अन्य लोगों के इस व्यवसाय को कुचल दो।

इसलिए, जहाँ तक उनका सवाल है, यह सब घृणित था। अब, दुर्भाग्य से, वोल्टेयर के लेखन में आपको बहुत ही प्रबल यहूदी-विरोधी भावना देखने को मिलती है, क्योंकि ईश्वर और बाइबल और यीशु के बारे में यह सब किसने बनाया? यह सब किसने बनाया, बेशक, यहूदी ही थे। इसलिए, आपको यहाँ बहुत ही प्रबल यहूदी-विरोधी भावना देखने को मिलती है।

और यह एक तरह का घिनौना हमला है। वॉल्टेयर का हमला ईसाई धर्म और उन चीज़ों पर एक तरह का घिनौना हमला है जिनका हमने अध्ययन किया है। मेरा मतलब है, इस तरह के हमले से देववादियों को भी अपमानित होना पड़ता क्योंकि देववादी एक ईश्वर में विश्वास करते थे और नैतिक जीवन में विश्वास करते थे।

तो खैर, यह वॉल्टेयर है। ठीक है, यह नंबर दो है। और फ्रांस छोड़ने से पहले, आइए हम रूसो पर आते हैं।

ठीक है। रूसो बहुत-बहुत महत्वपूर्ण हैं। अब, रूसो के बारे में बात यह है कि उनका जन्म फ्रांस में नहीं हुआ था।

उनका जन्म वास्तव में स्विटजरलैंड में हुआ था, लेकिन वे पेरिस चले गए। इसलिए, उनका जीवन और उनका लेखन फ्रांस से जुड़ा हुआ है। तो अब आप रूसो से जुड़ी कुछ बातों से परिचित होने जा रहे हैं।

मैं उनके बारे में चार बातें बताने जा रहा हूँ। रूसो के बारे में मैंने थोड़ा ज़्यादा समय इसलिए लिया क्योंकि अमेरिका में लोग रूसो को बहुत पढ़ते थे। रूसो यहाँ नई दुनिया में सार्वजनिक जीवन में बहुत प्रभावशाली रहे होंगे।

इसलिए हम इस ज्ञानोदय युग को समझने के लिए रूसो के साथ थोड़ा और समय बिताते हैं। मेरे पास रूसो के लिए शायद एक या दो चीज़ों के लिए समय है। ठीक है, रूसो के लिए नंबर एक है, उनके लिए धर्म की पहचान। जहाँ तक उनका सवाल है, धर्म की पहचान भावना है।

धर्म की पहचान आंतरिक जीवन है। आंतरिक जीवन, वह भावना जो आपके पास है, धर्म का सार यही है। तो वह जो कर रहा है वह उससे दूर जा रहा है। वह तर्कसंगतता की सीमाओं को साबित कर रहा है, है न? वह तर्क की सीमाओं को साबित कर रहा है।

वह दूसरी दिशा में जा रहा है। यदि धर्म भावना है, भावना है, और धर्म आंतरिक जीवन का विषय है, तो वह ज्ञानोदय के इन लोगों से दूर जा रहा है जो तर्कसंगतता पर बहुत अधिक केंद्रित थे। इसका मतलब है कि इस पहले बिंदु के तहत, रूसो उन व्यक्तियों में से एक है जो एक तरह से संक्रमण व्यक्ति बनने जा रहा है, जो व्यापक संस्कृति को ज्ञानोदय की दुनिया से तर्कसंगतता की दुनिया में ले जाने में मदद कर रहा है और 19वीं सदी में आने वाला अगला महान सांस्कृतिक आंदोलन क्या है? तर्क का युग नहीं, बल्कि 19वीं सदी में क्या आता है? वह रोमांटिकवाद होगा। रोमांटिकवाद भावनाओं और इसी तरह के अन्य पहलुओं पर आधारित एक तरह का सांस्कृतिक आंदोलन है।

तो, 18वीं सदी का संगीत, 17वीं सदी का संगीत क्या है? अगर आपको वह संगीत पसंद है, तो वह हैन्डल-हेडन है, है न? शायद यहाँ कुछ संगीत प्रेमी हों, लेकिन मेरे लिए, मेरे अपने सीमित दिमाग में, यह बहुत तर्कसंगत है, है न? संगीत बहुत तर्कसंगत है, बहुत उचित है। हालाँकि, जब आप 19वीं सदी में आते हैं, और आप चाइकोवस्की और अन्य लोगों के संगीत में आते हैं, तो संगीत बहुत अधिक है, है न? बहुत अधिक भावनात्मक और इसी तरह। और आप कह सकते हैं कि यह वही बात है, मुझे लगता है, कला और इसी तरह की अन्य चीजों के बारे में।

तो निश्चित रूप से, रूसो शायद यहाँ एक परिवर्तनकारी व्यक्ति है क्योंकि, उसके लिए, धार्मिक जीवन ईश्वरवादियों की तरह तर्कसंगत जीवन नहीं है। यह एक भावना, एक भावनात्मक जीवन है। तो यह एक तरह की बात है।

ठीक है, रूसो के बारे में दूसरी बात, और वह उनके लेखन में है, प्राकृतिक दुनिया की ओर वापसी, प्रकृति की ओर वापसी, एक तरह की महान, बर्बर तरह की कल्पना जो वह हमें देते हैं। वह हमें प्राकृतिक दुनिया में अधिक रहते हुए देखना चाहते हैं, और वह मानव जाति को उस तरह की प्राकृतिक नैतिकता के साथ देखना चाहते हैं जो आपको बढ़ती औद्योगिक दुनिया के स्वार्थ से दूर ले जाती है। बढ़ती औद्योगिक दुनिया की बुराई से दूर हो जाओ।

बढ़ती दुनिया के लालच से दूर हो जाओ। प्राकृतिक दुनिया में वापस जाओ, उस प्राकृतिक दुनिया में क्या इरादा था, वगैरह। खैर, ये एक और दो हैं।

तीन और चार। हम शुक्रवार को तीन और चार पर चर्चा करेंगे, और वास्तव में, तीसरा और चौथा हम जिस बारे में बात कर रहे हैं, उसके लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण है। तो, ठीक है, मुझे यहीं रुकना होगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा चर्च इतिहास, सुधार से वर्तमान तक के पाठ्यक्रम में दिया गया है। यह सत्र 10, ज्ञानोदय है।